POLITICAL SCIENCE Dep.
BA Part 2 (Hons), Paper 4

Dr. Husna Alia
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur

डेविड ईस्टन द्वारा प्रतिपादित व्यवस्था सिद्धांत

तुलनात्मक राजनीति में राजनीतिक व्यवस्था की संकल्पना का प्रतिपादन करने वाले विद्वानों में ईस्टन का नाम अग्रणी है। उन्होंने अपनी पुस्तक में राजनीति विज्ञान में एक सामान्य व्यवस्था सिद्धांत का विचार प्रस्तुत किया। उनकी पुस्तक का नाम 'दि पोलिटिकल सिस्टम' है।

ईस्टन के अनुसार राजनीतिक व्यवस्था क्रियाओं का समुच्चय है। राजनीतिक जीवन व्यवहार की एक ऐसी प्रक्रिया है जो राजनीतिक व्यवस्था के अंदर सतत चलती है। राजनीतिक व्यवस्था संस्थाओं एवं प्रक्रियाओं का एक जटिल समूह है जो समाज के भीतर आधिकारिक मूल्यों का विनियोजन करती है। इसके अंतर्गत माँगों को निर्गत में बदला जाता है। किसी भी व्यवस्था के जीवित रहने के लिए यह आवश्यक है कि उसमें निरंतर निवेश होता रहे। निवेश के बिना कोई भी व्यवस्था कार्य नहीं कर सकती। निर्गत के बिना उसके कार्यों को समझा पहचाना नहीं जा सकता।

राजनीतिक व्यवस्था के उपरोक्त व्याख्या को अधिक स्पष्ट करने के लिए ईस्टन ने

राजनीतिक व्यवस्था के तीन संघटकों का विस्तृत विवेचन किया है। इसे निवेश-निर्गत उपागम कहा जाता है।—

(i) राजनीतिक व्यवस्था के निवेश।
(ii) मांगों का रूपांतरण।
(iii) राजनीतिक व्यवस्था के निर्गत।

(i) निवेश कार्य —

निवेश से तात्पर्य मांग तथा समर्थन से है। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था के समक्ष पर्यावरण से कुछ मांगें आती हैं। इन मांगों के पीछे मांग रखने वालों का समर्थन होता है। यह राजनीतिक व्यवस्था में निर्णय लेने वालों का ध्यान उन मांगों की ओर आकर्षित करता है।

(ii) मांगों का रूपांतरण —

मांगों के रूपांतरण की प्रक्रिया उन तरीकों को कहा जाता है जिससे राजनीतिक व्यवस्था उन मांगों को अस्वीकार करती है, पूरा करती है या उनमें हेर-फेर करती है।

(iii) राजनीतिक व्यवस्था के निर्गत

निर्गत वे उत्पादित वस्तुएं हैं जो निवेश के रूपांतरण के बाद प्राप्त होती है। राजनीतिक व्यवस्था विभिन्न प्रकार के निवेशों पर निर्णय लेती है।

Scanned with CamScanner